मौर्यकाल अशोक स्तम्भ (325 से 185 ई० पू०)

मौर्यकाल की स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य ने चौथी शताब्दी ई०पू० के उत्तरार्द्ध में की थी। वह मगध साम्राज्य का स्वामी था और पाटली पुत्र उसकी राजधानी थी। मौर्य काल के कलाओं के फूलने के लिए अत्यन्त अनुकूल समय था। चन्द्रगुप्त के पौत्र अशोक के समय में कलाओं को संरक्षण प्राप्त हुआ। मौर्यकाल में मूर्तिकला आवास गुहा मूर्तिया तथा स्तूप विशेष उल्लेखनीय है। आधुनिक गया से 16 mill दूर गुफाओं के दो समूह स्थित है। बराबर की पहाड़ियों में चार तथा नागार्जुनी नामक पहाड़ी में तीन गुफायें है। इनमें कर्ण चौपड़ सुदामा और लोमस ऋषि गुफा प्रसिद्ध है। लोमस गुफा के सामने का भाग उत्कीर्ण तथा अलंकृत है। पत्थर में मेहराबदार द्वार की खुदाई इस प्रकार है कि लकड़ी के द्वार की अनुकृति जैसी लगती है। उत्तरी भारत के विस्तृत क्षेत्र में मौर्यकाल की आदमकद भारी भरकम बलिष्ट मानव मूर्तिया समय-2 पर प्राप्त होती रही है। इनकी विशेषताओं और शैलीगत रचना के आधार पर इन्हे एक अलग वर्ग में रखा जाता है। इन्हे यक्ष और यक्षी मूर्ति कहा गया। इनमें मथुरा से प्राप्त पौने नौ फुट की विशालकाय यक्ष की प्रतिमा तथा दीदार गंज (बिहार) से ओप युक्त यक्षी विशेष प्रसिद्ध है। मौर्यकाल की कला में सर्वाधिक महत्वपूर्ण शिल्प अशोक कालीन स्तम्भ है।

शीशे जैसी चमक वाले पत्थर के बने लाट जैसी आकृति के भव्य और भारी अशोक स्तम्भ मौर्यकाल के उत्कृष्ट नमूने है। इन पर अशोक धर्म के सन्दर्भ उत्कीर्ण है। अशोक द्वारा बनाये गये स्तम्भों की सं० 30, 40 के बीच रही होगी। इनमे वैशाली (सिंहध्वज) संकिस्सा (हस्ति ध्वज राम पुरवा (वृषध्वज और सिंहध्वज) लौरिया नन्दन व साञ्ची

Scanned with CamScanner

नदी किया। कुंची रेशेदार वृक्ष (बाँस) आदि के सिरे को कुट कर बनायी गयी है।

1- मेरठ में आलमगीर पुर (UP) क्षेत्र सिन्धु घाटी सभ्यता क्षेत्र है। यह हिण्डन नदी के पास स्थित है।

2- हड़प्पा का प्राचीन नाम हरियूपिया है।

3- मोहनजोदड़ो स्थित है। बावो नदी के पास

4- मोहनजोदड़ो को "मुर्दो का टीला" भी कहते हैं।

5- हड़प्पा सिन्धु घाटी नदी के पास स्थित है।

6- विद्वानो ने मोर को सूर्य का पक्षी माना है। जो आत्माओं को सूर्यलोक ले जाने की चमत्कारी शक्ति रखते हैं।

Scanned with CamScanner